जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

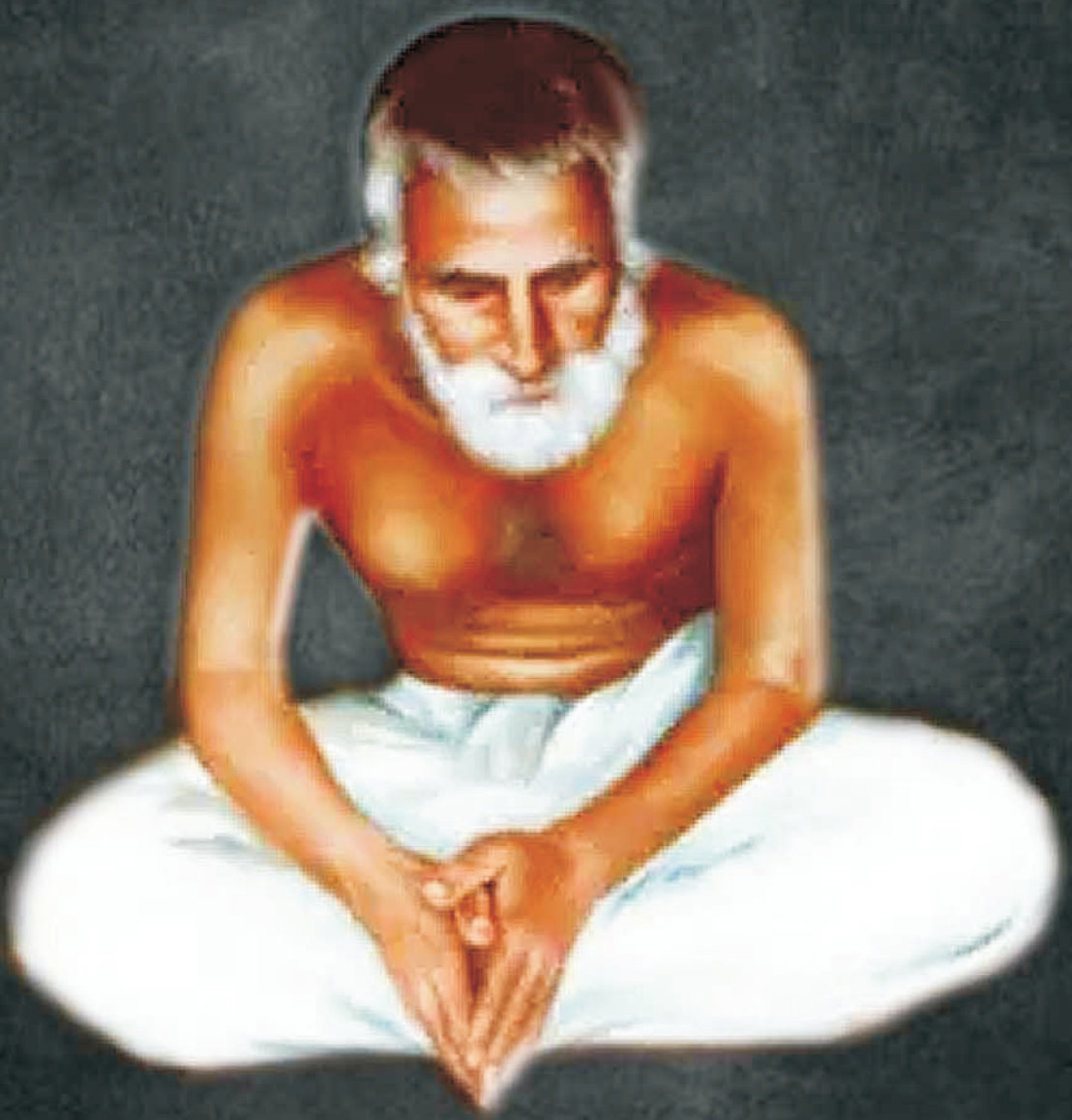

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

भक्ति और भण्डामी

श्री श्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

'दी***' दास नाम का एक व्यक्ति कुछ समय के लिए बाबाजी महाराज के पास था। लोग भी इसलिए 'दी***' दास के प्रति यथेष्ट श्रद्धा-भक्ति रखते थे। 'दी***' उड़ीसा का रहने वाला था। एक बार उसके पूर्वाश्रम के पिताजी आ गये। 'दी***' के पिता हाथ से

लिखी एक भागवत सभी जगह ले जाते और उसे दिखाकर कुछ धन संग्रह करते। 'दी***' के पास बहुत लोग बाबाजी महाराज की सेवा के लिए रुपया-पैसा देते थे। 'दी***' ने उसमें से छिपाकर, अपने दरिद्र पिता को कुछ रुपया देकर सहायता की। अन्तर्यामी बाबाजी महाराज यह जान गये। उन्होंने 'दी***' के साथ बात करनी बन्द कर दी। पहले 'दी***' समय समय पर

बाबाजी महाराज को चावल बनाकर देता था। बाबाजी महाराज ने उस समय से 'दी***' के हाथ की छुई कोई वस्तु भी ग्रहण करना बन्द कर दिया। पहले के समान फिर से कच्चे चावलों को जल में भिगोकर भोजन करने लगे। यह देखकर 'दी***' बहुत डर गया और अन्यान्य लोग भी यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठे। 'दी***' ने भी अन्न-जल परित्याग कर

दिया। यह बात बाबाजी महाराज को बताने पर उन्होंने कहा,– "यह व्यक्ति यदि मेरे पास से अभी नहीं गया, तो मैं गंगा में प्राण त्याग कर दूँगा।" एक दिन बाबाजी महाराज गंगा में कूद पड़े। सभी लोग बाबाजी महाराज को पकड़ने के लिए गये। तब बाबाजी महाराज चिल्ला- चिल्लाकर कहने लगे,– "मुझे छोड़ दो, छोड़ दो, मेरा जब हरिभजन हुआ नहीं तब मैं इस शरीर को और नहीं

रखूँगा। सभी ने पकड़कर बाबाजी महाराज को गंगा से उठा लिया। स्वस्थ होने के बाद बाबाजी महाराज ने कहा– "तुमने मुझे गंगा से क्यों बचा लिया? मेरा सब कुछ तो 'दी***' ने अपने पिताजी को दे दिया है।" तब सभी ने कहा,– 'हम आपको जितने रुपये पैसों की आवश्यकता है, सारे देंगे।

'दी***' ने जितने सब रुपये-पैसे नष्ट कर दिए हैं,

उससे चार गुणा अभी लेकर आते हैं।' श्रील बाबाजी महाराज ने कहा– "मुझे रुपये पैसों की कोई जरूरत नहीं है, 'दी***' मेरे पास नहीं रह सकता। कपटी के साथ रहने से मेरे भजन का व्याघात होगा।" अनेक लोगों ने मन में सोचा कि बाबाजी महाराज शायद रुपये-पैसे की आसक्ति के कारण गंगा जी में कूद पड़े थे। लेकिन वे अब समझ गये कि बाबाजी महाराज रुपये-पैसों के

भिक्षुक नहीं हैं, वे सेवा के नाम पर कपटता को सहन नहीं करते। कृष्ण से सम्बन्ध रहित वस्तुओं के प्रति आसक्ति ही कपटता है। सरलता होने से वही आसक्ति कृष्ण की तरफ मुड़ जाती है। वह सरलता ही वैष्णवता है।

श्रीलगुरुदेव